दादागुरु श्री जिनकुशल सूरि

जोधपुर से कुछ दूर एक कस्बा है, गढ़ सिवाना। प्राचीन समय में इसे समियाणा कहते थे। यहाँ पर ओसवाल जैन समाज के सैकड़ों धनाढ्य परिवार रहते हैं। लाल पत्थर की बनी गढ़नुमा हवेलियाँ। एक-एक हवेली में विशाल संयुक्त परिवार व सेवक, दास-दासियों की चहल-पहल। पास में बड़े-बड़े बाड़े जिनमें रहते हैं गाय-बैल, रथ-घोड़े आदि। ऐसा लगता है, जैसे हर एक परिवार एक रजवाड़ा है। वहाँ के परिवार अधिकतर सम्पन्न हैं और सम्पन्नता में संप (एकता-संगठन) भी है। आस-पास मुहल्ले-गाँव के लोग बैठे गप-शप करते रहते हैं। किसी की कोई शिकायत, आपस का झगड़ा या कुछ लेन-देन की बातें सबका निपटारा हो जाता है। मुस्सिया सेठ को शाह जी कहकर पुकारते हैं। उसी गाँव में मंत्री जेसलशाह छाजेड़ अपनी पत्नी जयतश्री के साथ विशाल भव्य हवेली में रहते हैं।

प्रातःकाल के समय मंत्री जेसल जी एक चबूतरे पर बड़े पलँग पर बैठे थे। आस-पास गाँव के अनेक शाह, साहूकार और कारू-कमीन भी उनके सामने बैठे हुए थे। तभी ऊपर हवेली से दौड़ती हुई एक दासी आई।

वि. सं. 1337, मार्गशीर्ष कृष्णा 3

बारहवें दिन पुत्र का नामकरण समारोह किया गया। ज्योतिषी ने लग्न देखकर बताया—
बालक की राशि मिथुन है इसलिये इसका नाम "करमण कुमार" रखा जाये।
यह बालक बड़ा बुद्धिमान और धर्मात्मा होगा। देश-देशान्तर में इसका नाम होगा। बड़े-बड़े सेठ, साहूकार, राजा, नवाब इसके सामने मस्तक झुकायेंगे।

माता जयतश्री बालक करमण को अपने हाथों से नहलाकर सुन्दर वस्त्र-गहने पहनाकर गाल पर काली टिकी लगाती है।
इस चाँद से मुखड़े को किसी की नजर न लगे।
बालक दूज के चाँद की तरह बढ़ने लगा।

एक दिन मंत्री जेसलशाह ने जयतश्री से कहा—
देवी, अब हमारा करमण सात वर्ष का हो रहा है। इसे पाठशाला भेजना चाहिए।
स्वामी, आप जिसे पढ़ाना चाहते हैं वह तो पूर्व-जन्म से ही सब पढ़कर आया है। बेटा करमण, पिताश्री को सुनाओगे....

करमण खड़ा हुआ और बोलने लगा—
ओं नामा सीधं। सीधो वरणो समामुनाया...
(ॐ नमः सिद्धा। सिद्धो वर्णः समाम्नायः)
वाह बेटे, यह तुमने कैसे सीखा, कहाँ सीखा ?

पिताश्री, मैं प्रतिदिन प्रातः माताश्री के साथ मन्दिर जाता हूँ। भगवान के दर्शन कर बाजू की ज्ञानशाला में बैठ जाता हूँ। जब तक माताश्री पूजा करती हैं मैं वहाँ बच्चों के मुँह से यह सुनता रहता हूँ। सो मुझे सब याद हो गया।

जेसलशाह ने करमण को पकड़कर गोद में ले लिया।
एक दिन नवकोटि मारवाड़ का दीवान बनेगा, मेरा बेटा।

स्वामी, अपने गुरांसा (ज्योतिषी) तो कहते हैं, यह राजाओं का भी राजा बनेगा।

एक दिन करमण पाठशाला में पढ़ रहा था तो गुरुजी ने बच्चों से पूछा—
बच्चों बताओ, जनेऊ की खूँटी कौन-सी होती है ?
बच्चे इधर-उधर झाँकने लगे।